समावेशन और सामाजिक-भावनात्मक ख़ुशहाली

मैथिली के.

इस लेख में मैंने प्रमुख तौर पर शिक्षण के उन तरीक़ों पर प्रकाश डाला है जो विकासात्मक असमर्थता वाले ऐसे विद्यार्थी की सामाजिक और भावनात्मक ख़ुशहाली को सुगम बना सकते हैं, जो कि कक्षा में शामिल किए जाने के अवसर की प्रतीक्षा में था। साथ ही इसे हासिल करने में उसके साथियों द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका पर भी इस लेख में प्रमुखता से बात की गई है।

सन्दर्भ

महामारी के बाद, जब ज़्यादातर दुनिया ऑनलाइन टीचिंग-लर्निंग के अनुकूल होने की कोशिश कर रही थी, हमने ग्राम पंचायत (जीपी) पुस्तकालयों के साथ एक विकल्प बनाने की कोशिश की। यह एक सरल मॉडल था जिसका उद्देश्य था पुस्तकालय के पाँच किलोमीटर के दायरे में स्कूल और स्कूल के बच्चों को जोड़ना। हम हर दिन कुछ घण्टों के लिए सभी आयु वर्ग के शिक्षार्थियों से मिलते थे, जिसमें काफ़ी हद तक चीज़ों का अनुभव करने पर ज़ोर दिया जाता था, जैसे विभिन्न वस्तुओं को छूना और उनकी भौतिक विशेषताओं को महसूस करना; पैटर्न और प्रक्रियाओं पर ध्यान देना। जैसे जब हरे और लाल रंगों को मिलाया जाता है, तो प्राथमिक रंगों के उपयोग की मात्रा के आधार पर भूरे रंग की श्रेणियाँ मिल सकती हैं; रंगों से खेलना, उँगलियों के निशान बनाना, सब्ज़ियों और पत्तों की छाप बनाना; शारीरिक गतिविधियाँ करना, जैसे हँसना, कूदना, दौड़ना और फिर महसूस करना कि इनके बाद उन्हें प्यास लगती है; संज्ञानात्मक क्रियाएँ, जिनमें बहुत सारा सोच-विचार शामिल होता है, जैसे प्रश्न पूछना और सम्भावित उत्तरों पर विचार करना और एक हल्के व आनन्ददायक वातावरण में बातचीत करना। चूँकि यह सीखने और सीखे हुए की बहाली वाले चरण की शुरुआत थी, कक्षा-1 से 7 तक बच्चों के लिए भाषा और गणित की गतिविधियाँ करवाई गईं। हमने जीपी पुस्तकालय, उज्जिनी के आस-पास के तीन स्कूलों के शिक्षकों के साथ मिलकर एक टाइमटेबल बनाया। यह केवल बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक गतिविधियों पर केन्द्रित था। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा बनाई गईं वर्कशीट सन्दर्भ के रूप में हमारे काम आईं। ऐसे ही एक दिन हमने इन गतिविधियों की योजना बनाई थी : प्रत्येक बच्चे की पसन्द के स्थान की स्केचिंग/ पेंटिंग, कहानी-निर्माण, चित्रों को पढ़ना, ज़ोर से पढ़ना और गिनती करने की गतिविधियाँ।

स्केचिंग की गतिविधि में अधिकांश बच्चों ने उनके स्कूल के चित्र बनाए, कुछ ने अपने घरों के चित्र बनाए। गिनती की गतिविधियों में, हमने किताब में छोटी मात्राओं की पहचान करके शुरुआत की और फिर धीरे-धीरे बड़ी मात्राओं की तरफ़ बढ़े। यह गतिविधि कक्षा-1 से 3 तक के 14 नली-कली विद्यार्थियों के लिए थी। हमने उनके गिनने के लिए कुछ ठोस वस्तुएँ चुनीं और फिर उन्हें कुछ चित्र दिए। इसके बाद हम चित्रों में दी गई वस्तुओं की संख्याओं को उतनी ही संख्या की ठोस वस्तुओं के साथ मिलाने लगे। फिर हम पुस्तकालय के प्रवेश द्वार की ओर बढ़े और सीढ़ियों को चढ़ते-उतरते गिनने लगे। सीढ़ियों के पहले हिस्से में 10 सीढ़ियाँ थीं और अगले में 10 और थीं। बच्चे जब सीढ़ियों से ऊपर जाते तो उनकी संख्या गिनते और जब नीचे उतरते तो उलटे क्रम में गिनते। उन्होंने यह दो और तीन के समूहों में किया और अन्त में, एक विद्यार्थी किसी भी सीढ़ी पर खड़ा हो जाता और अन्य विद्यार्थी उसकी संख्या को ज़ोर से बोलते। इस गतिविधि का उद्देश्य बच्चों में क्रमसूचकता (ordinality) और गणनसंख्यात्मकता (cardinality) की समझ बढ़ाना था।

मेरी क्लास में एक बच्ची थी, जिसका नाम रूबी था। वह हर दिन गतिविधियों में उपस्थित तो होती थी, लेकिन सबसे अलग रहती थी। उसके सहपाठियों और शिक्षकों ने बताया कि वह ज़्यादा नहीं बोलती थी और उसकी विकास की गति भी आंशिक रूप से धीमी थी। रूबी अन्य गतिविधियों के लिए निर्देशों को सुनती थी लेकिन उसके बावजूद वह ख़ुद अपनी कुछ पेंटिंग या स्केचिंग करती रहती थी। उसने अन्य गतिविधियों में भाग लेने से इनकार कर दिया था और केवल उन्हें देखा करती थी। लेकिन उस दिन रूबी ने अचानक कहा, 'येरिके इलिके क्रमा' (आरोही और अवरोही क्रम)।

बाक़ी बच्चों ने दिलचस्पी दिखाते हुए उससे पूछा वह क्या कह रही थी।

रूबी ने सीढ़ी की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह आरोही और अवरोही क्रम है।"

एक अन्य विद्यार्थी ख़ुशी से ज़ोर से बोला, "हाँ, मिस, वह सही कह रही है!"

एक अन्य विद्यार्थी ने समझाया, "नीचे आ रही सीढ़ियाँ घटते क्रम में हैं और ऊपर जाती सीढ़ियाँ आरोही क्रम है!"

रूबी ने सीढ़ियों पर चढ़ने की क्रिया दिखाते हुए समझाया, "गिनो 1, 2, 3..."

रूबी को बात करने में थोड़ी परेशानी होती है जिसके कारण मुझे उसकी बात समझने में मुश्किल हुई, लेकिन उसके सहपाठी उसे बेहतर समझते थे क्योंकि वे उसे अच्छी तरह से जानते थे। सभी बच्चों ने इस गतिविधि की नब्ज़ को पकड़ लिया और सीढ़ियाँ चढ़ते समय गिनना शुरू किया 4 ,3 ,2 ,1... और फिर नीचे उतरते समय उल्टा गिनना। इसके बाद हमने अलग-अलग सीढ़ियों की ओर इशारा करते हुए अगली और पिछली संख्याओं की पहचान करने की भी कोशिश की। उदाहरण के लिए, एक बच्चा चौथी सीढ़ी पर खड़ा होता और बाक़ी बच्चे उसकी अगली सीढ़ी को पाँच कहते और पिछली को तीन। हमने सामूहिक रूप से उत्तर देने के लिए एक विधि बना ली थी — जिन बच्चों को उत्तर पता होता वे अपना हाथ उठाते और उन्हें एक-एक करके जवाब देने का मौक़ा दिया जाता। हमने यह खेल तब तक खेला जब तक सभी को एक मौक़ा नहीं मिल गया। रूबी ख़ुद से ज्ञान के निर्माण से सम्बन्धित अपनी पसन्द और तरीक़े को लेकर बहुत निश्चित थी, हालाँकि उसकी सीखने की गति बाक़ियों से अलग थी और शायद वह ख़ुद को व्यक्त करने के सही वक्त का इन्तज़ार कर रही थी। इस क्षेत्र में काम करने वाले पेशेवर व्यक्ति के रूप में, मुझे इस क्लास ने समावेशी कक्षा या एक समावेशी शैक्षिक प्रणाली को तैयार करने के लिए व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया। शिक्षक और बाक़ी बच्चे रूबी को उसी क्षण से अलग ढंग से देखने लगे जिस क्षण वह बोली थी, 'येरिके इलिके क्रमा!'

यह दिन मस्ती भरा और सन्तोषजनक रहा जिसमें ठोस रूप से सीखने को मिला। ऐतिहासिक रूप से, शोधकर्ता बताते हैं कि सीखना, अर्थ समझना और ज्ञान निर्माण एक तनाव रहित, शान्तिपूर्ण और सुकून भरे वातावरण में होता है। मैं कहूँगी कि मानसिक स्वास्थ्य या सामाजिक और भावनात्मक ख़ुशहाली का सीधा सम्बन्ध ज्ञान निर्माण की गुणवत्ता और उसकी गति से है। जीपी पुस्तकालय में सीखने की कार्यक्षमता और आनन्द को देखने के बाद, उज्जिनी और उस ज़िले के कई अन्य पुस्तकालयों ने इस मॉडल को आजमाया और व्यापक रूप से सीखने की इस प्रक्रिया में सफल हुए। जीपी पुस्तकालयों के इर्द-गिर्द बने इन लर्निंग समूहों को ग्राम पंचायत लाइब्रेरी लर्निंग यूनिट कहा जाता है, जो नियमित रूप से स्कूली शिक्षा शुरू हो जाने के बावजूद आज भी काम कर रही हैं। अब ये कक्षाएँ कुछ निश्चित दिनों में चलती हैं जिनमें शिक्षक और लाइब्रेरियन दैनिक कार्यों और गतिविधियों की योजना बनाते हैं। वहाँ का समुदाय अपने बच्चों को इन सीखने की गतिविधियों में शामिल होता देखकर ख़ुश है।

मैंने लाइब्रेरियन से सुना है कि रूबी नियमित तौर पर पुस्तकालय जाती है और वहाँ की सारी किताबों को देखती है। हालाँकि रूबी को पढ़ने में कठिनाइयाँ आती हैं, लेकिन वह किताबों में चित्रों की ओर इशारा करती है और उनके आधार पर कहानियाँ गढ़ने की कोशिश करती है और फिर उन्हें मज़े से लाइब्रेरियन को सुनाती है।

रूबी के स्कूल के दौरों के दौरान, मुझे शिक्षक ने बताया कि ऐसा लगता है कि चित्रों को देखकर कहानियाँ बनाने में रूबी की रूचि विकसित हुई है। साथ ही अब वह कक्षा की सामान्य गतिविधियों में हिस्सा लेने लगी है, शायद थोड़ी धीमी गति से ही, लेकिन वह भी अपनी बात कहना चाहती है। शिक्षक ने यह भी बताया कि लाइब्रेरी की घटना के बाद से बाक़ी क्लास भी रूबी से बात करने और उसे अपने खेलों में शामिल करने के लिए प्रयास करती है। अब रूबी के भी दोस्त हैं, वह बातचीत करती है, हँसती है और बाक़ी बच्चों की तरह लंच ब्रेक के दौरान गलियारों में भाग-दौड़ करती है।

इन्सान होने के नाते, हमारे अन्दर पूर्वाग्रह होते हैं, हालाँकि शिक्षक या पेशेवर के रूप में, यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम निष्पक्ष रहें। प्रत्येक शिक्षार्थी के पास अलग-अलग क्षमताएँ होती हैं और उन्हें अभिव्यक्ति के सही अवसर प्रदान करना हमारा काम है।

इससे पहले, शिक्षक और रूबी के सहपाठी मुझे इस तरह की टिप्पणियों से भर देते थे कि 'रूबी बात नहीं करती', 'रूबी कुछ नहीं जानती', 'वह हमारे साथ नहीं खेलती' आदि। यह सब सुनने के बाद, पहले तो मैंने भी रूबी के साथ सचेत प्रयास करना बन्द कर दिया था, क्योंकि मैंने मान लिया था कि रूबी कक्षा की प्रक्रियाओं में रुचि नहीं लेगी। हालाँकि, मेरे मन में यह सवाल उठा : "क्या समावेशी शिक्षा को लागू करने का कोई फ़ायदा है, यदि बच्चों को लगता ही नहीं कि वे इसका हिस्सा हैं?" मुझे ऐसा लगा कि कक्षा की गतिविधियों में शामिल न किया जाना असमानता का वह पहला मामला होता है जो विविध ज़रूरतों वाले बच्चे के समक्ष आता है और वह बच्चा इस स्थिति में भी नहीं होता कि अपने अधिकार को पहचान सके और उसके लिए लड़ सके। यहाँ शिक्षकों की भूमिका अनमोल हो जाती है क्योंकि विद्यार्थी अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा उनके साथ स्कूल में बिताते हैं। प्राथमिक स्कूल

शिक्षक की भूमिका और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह बच्चों के जीवन का ऐसा चरण होता है जब उनके बुनियादी व्यवहार और रवैए आकार लेते हैं। जीवन के इस पड़ाव पर पक्षपात का सामना करने के विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं।

रूबी जैसे विद्यार्थी अक्सर हमारी कक्षाओं का हिस्सा होते हैं और महामारी से पहले भी रहे हैं। महामारी ने सामाजिक-भावनात्मक ख़ुशहाली के बारे में अधिक जागरूकता पैदा की है, जिससे हम और अधिक संवेदनशील हो गए हैं। रूबी अपनी भागीदारी दर्ज कराने के सही मौक़े का इन्तज़ार कर रही थी, जो दर्शाता है कि एक शिक्षक के रूप में मेरी प्राथमिक ज़िम्मेदारी है कि कक्षा में प्रत्येक बच्चे के लिए उनके सीखने के स्तर से प्रभावित हुए बिना अवसर पैदा करूँ।

इस कक्षा ने मुझे दिखाया कि बच्चों के व्यापक रूप से सीखने के लिए उनकी भावनात्मक ख़ुशहाली एक प्राथमिक आवश्यकता है और समावेशी शिक्षा का प्रारूप इसे प्राप्त करने का एक माध्यम हो सकता है। तो समावेशी शिक्षा एक प्रक्रिया है, न कि सिर्फ़ गन्तव्य।

*बच्चों की पहचान को सुरक्षित रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।

मैथिली के. अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के कोप्पल ज़िला संस्थान में ज़िला समन्वयक हैं। उन्होंने मैसूर विश्वविद्यालय से प्राणी विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। उनकी रुचियाँ हैं बच्चों को बुनियादी विज्ञान पढ़ाना और इसके बारे में फैली ग़लत धारणाओं को दूर करना। उनसे *maithily.k@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : प्रसन्न कुमारी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

सामाजिक प्रक्रिया और सीखने की प्रक्रिया, दोनों ही रूप में सीखना एक समावेशी माहौल में सबसे अच्छी तरह से घटित होता है, जहाँ सहकार और सहयोग होता है। हर एक को यह महसूस होता है कि उसकी परवाह की जा रही है और उसे विविध पृष्ठभूमियों और दृष्टिकोणों को जानने का मौक़ा मिलता है।

- सुरेश साहू, स्कूल में संवैधानिक मूल्य : सद्भावना स्कूल कार्यक्रम, पेज 17